## ● सुनो, समझो और सुनाओ :

# ६. परिश्रम ही पूजा

इस निबंध में लेखक ने 'परिश्रम ही सफलता की कुंजी है' यह बताते हुए अधिक परिश्रम करने हेतु प्रेरित किया है ।

### विचार मंथन

।। श्रम का फल मीठा होता है ।।

परिश्रम ही पूजा है । पूजा तो पूजा ही होती है । पूजा परमात्मा की होती है । इष्टदेव की होती है । इस पर विचार अलग-अलग हो सकते हैं किंतु इसमें दो राय नहीं कि पूजा आलस्यमन नहीं होती । बड़े-बड़े कर्मयोगियों ने कर्म को पूजा माना है । चिंतन की भी राष्ट्र को आवश्यकता होती है परंतु वास्तव में परिश्रम की आवश्यकता इससे कहीं ज्यादा है । बचपन से ही परिश्रम करने का अभ्यास निस्संदेह आपको सफलता की राह पर ले जाता है । यदि आपको आलस्य की आदत पड़ गई तो समझ लीजिए कि आप पतन की ओर जा रहे हैं । दुखों की मार से फिर आपको कोई बचा ही नहीं सकता । कहा गया है-'आलस्यो हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः ।'

सचमुच आलस्य शरीर में ही बसने वाला हमारा सबसे बड़ा शत्रु है । संत कबीर केवल भक्त या संत ही नहीं थे, वे अपने हाथ से कपड़ा भी बुनते थे । वे परिश्रम को ही पूजा मानते थे । परिश्रम शारीरिक ही नहीं होता, मानसिक और बौद्धिक परिश्रम भी होते हैं । परिश्रमी में आत्मविश्वास होता है । उसे मालूम होता है कि परिश्रम का फल मीठा होता है । फल मिलने में देर हो सकती है परंतु परिश्रम निष्फल नहीं हो सकता ।

एक बार एक विद्यालय का परीक्षा परिणाम घोषित किया जा रहा था । एक बालक ने खड़े होकर कहा कि उसका परिणाम घोषित नहीं हुआ । प्रधानाचार्य ने कहा-''जिनके नाम नहीं बोले गए वे उत्तीर्ण नहीं हैं ।'' बालक दृढ़तापूर्वक बोला- ''गुरुदेव ! ऐसा नहीं हो सकता ।'' प्रधानाचार्य ने जोर देकर कहा-''बैठ जाओ! तुम अनुत्तीर्ण हो ।''

विद्यार्थी फिर भी नहीं बैठा तो प्रधानाचार्य ने उसपर पाँच रुपये जुर्माना लगा दिया । विद्यार्थी ने पुनः निवेदन किया तो जुर्माना दस रुपये कर दिया गया । विद्यार्थी फिर भी नहीं बैठा । कक्षाध्यापक ने भी कहा- ''सर ! बालक ठीक कहता है, यह अनुत्तीर्ण नहीं हो सकता । यह पढ़ाई में कठिन परिश्रम करता है । ''

इतने में विद्यालय का बाबू दौड़ा-दौड़ा आया और क्षमा माँगते हुए बोला-''सर, टाइप होने में एक नाम छूट गया था ।'' वह नाम उसी परिश्रमी छात्र का था और उसके अंक भी सर्वाधिक थे । वह बालक और कोई नहीं बल्कि राजेंद्र प्रसाद थे, वही राजेंद्र प्रसाद

❑ किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से पाठ का मुखर वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से पाठ के मुद्दों पर चर्चा कराएँ । उनके बचपन के प्रसंग सुनाने के लिए कहें । निबंध के मुद्दे देकर लेखन के लिए प्रोत्साहित करें ।

## वाचन जगत से

गणतंत्र दिवस पर सम्मानित बच्चों के बहादुरी के प्रसंग पढ़ो और पसंदीदा एक का वर्णन करो ।

https://india.gov.in

जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया । आगे चलकर भारत के प्रथम राष्ट्रपति चुने गए ।

× × × × × ×

व्याकरण के आचार्य कैयट दिनभर आजीविका के लिए परिश्रम करते और रात्रि को जागकर व्याकरण लिखा करते । इससे उनका स्वास्थ्य गिरने लगा । उनकी पत्नी ने आग्रह किया-''आप समाज के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं । घर का खर्च चलाने की चिंता आप मुझपर छोड़ दीजिए ।'' परिश्रमी व्याकरणाचार्य अपनी पत्नी से बोले -''तुम घर कैसे चलाओगी ?'' वह भी घोर परिश्रमी थी । ''आश्रम की सीमा पर खड़े कुश की मैं रस्सियाँ बनाऊँगी । आप एक दिन जाकर साप्ताहिक बाजार में बेच आइएगा । घर का खर्च इसी से चल जाएगा । आप व्याकरण की रचना के लिए अधिक समय निकाल सकेंगे ।''आचार्य कैयट ने पत्नी की बात स्वीकार की । वैयाकरण कैयट बोले-''वाह! तुमने तो बता दिया कि परिश्रम ही पूजा है । श्रम से ही जीवन में सब साध्य होता है । अब तो शीघ्र सफलता मिलेगी ।'' आगे चलकर उन्होंने अद्‌भुत व्याकरण की रचना की । यह पुस्तक आगे चलकर विद्‌यार्थियों के लिए पथ प्रदर्शक का काम करने लगी ।

## मैंने समझा

-----------------------------------------------------------
-----------------------------------------------------------
-----------------------------------------------------------

## शब्द वाटिका

**नए शब्द**

**राय** = सलाह, अभिप्राय

**निस्संदेह** = बिना किसी आशंका के

**जुर्माना** = आर्थिक दंड

**कुश** = एक प्रकार की घास

**वैयाकरण** = व्याकरण के जानकार

**मुहावरा**

**घर चलाना** = घर का खर्च उठाना

## अध्ययन कौशल

सुने हुए नए शब्दों की वर्णक्रमानुसार तालिका बनाकर संभाषण एवं लेखन में प्रयोग करो ।

## स्वयं अध्ययन

सौरऊर्जा पर टिप्पणी तैयार करो और पढ़ो :

सौरऊर्जा

महत्त्व

प्रयोग

www.seci.gov.in

## सुनो तो जरा

अपने पसंदीदा विषय पर चार पंक्तियों में कविता बनाओ और सुनाओ ।

## मेरी कलम से

अपने परिवार में घटित कोई हास्य प्रसंग अपने शब्दों में लिखो ।

**✻ किसने, किससे, क्यों कहा है ? लिखो :**

(क) ''सर, टाइप होने में एक नाम छूट गया था ।''

(ख) ''गुरुदेव ! ऐसा नहीं हो सकता ।''

(ग) ''घर का खर्च चलाने की चिंता आप मुझपर छोड़ दीजिए ।''

(घ) ''वाह ! तुमने तो बता दिया कि परिश्रम ही पूजा है ।''

## भाषा की ओर

पढ़ो, समझो और करो :

() छोटा कोष्ठक, [] बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक, {} मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक, ^ हंसपद

**छोटा कोष्ठक ()**
क्रमसूचक अक्षर, अंक, संवादमय लेखों में हावभाव सूचित करने के लिए () इसका प्रयोग करते हैं ।

**बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक []**
लेखन में त्रुटि या पूर्ति बताने, दूसरे कोष्ठक को घेरने के लिए [] इसका प्रयोग करते हैं ।

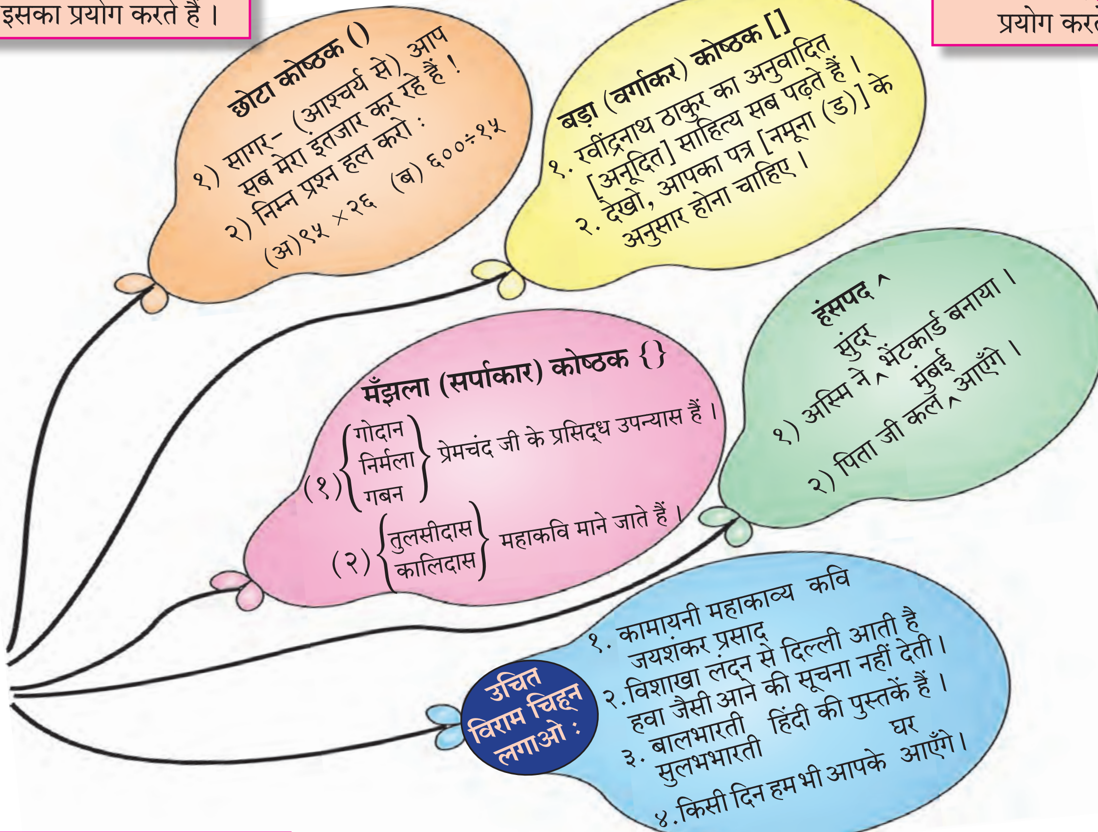


**मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक {}**
एक साधारण पद से संबंध रखने वाले अलग-अलग पंक्तियों के शब्दों को मिलाने के लिए {} इसका प्रयोग करते हैं ।

LEXSX2

**हंसपद ^**
लेखन में जब कोई शब्द छूट जाता है तब उसे पंक्ति के ऊपर लिखकर ^ यह चिह्न लगाते हैं ।